Vol III Issue I Feb 2013
Impact Factor : 0.2105 ISSN No : 2230-7850

Monthly Multidisciplinary
Research Journal

Indian Streams Research Journal

Executive Editor
Ashok Yakkaldevi

Editor-in-chief
H.N.Jagtap

IMPACT FACTOR : 0.2105

Welcome to ISRJ

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2230-7850**

Indian Streams Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial Board readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

International Advisory Board

Flávio de São Pedro Filho
Federal University of Rondonia, Brazil

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya [Malaysia]

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus Pop

Mohammad Hailat
Dept. of Mathmatical Sciences, University of South Carolina Aiken, Aiken SC 29801

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Catalina Neculai
University of Coventry, UK

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Postdoctoral Researcher

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Department of Chemistry, Lahore University of Management Sciences [PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Horia Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

Nawab Ali Khan
College of Business Administration

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University, Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University, Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary, Play India Play (Trust),Meerut

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU, Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Ph.D , Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.isrj.net

Indian Streams Research Journal
Volume 3, Issue.1,Feb. 2013
ISSN:-2230-7850

Available online at www.isrj.net

ORIGINAL ARTICLE

अमृतलालनागर के उपन्यास "बूंद और संमुंद्र " में व्यक्त संवेदना

हरमन्दर सिंह वर्मा

शोधार्थी,
निम्स विश्वविधालय शोभा नगर, जयपुर।

सारांश

अमृतलालानागर के उपन्यासों की कथ्यगत विविधता ,व्यापकता और जीवन सहजता उन्हें एक अप्रत्तिम और विशिष्ट कथाकार के रूप में प्रतिष्ठित करती है | कई कलाकारों के विपुल साहित्य में भी एक तरंह की वृन्तगत एकता होती है , किन्तु नागर जी का हर उपन्यास एक अलग कथ्यगत मंगिमा के साथ अवतरित होता है – समाज ,संस्कृति, इतिहास, कल्पना, आदर्श और यथार्थ के गंगामुखी समस्या का एक विराट और विविधतापरक दर्पण है नागर जी का कथा साहित्य |

प्रस्तावना

नागर जी के विचार एक रस नही है उनमें समाज ,संस्कृति, इतिहास से संबंधित व्यक्ति के जीवन के अनेक पहलुओं की रंगत भी है द्य नागर जी का औपन्यासिक सृजन सामाजिक सन्दर्भों का पार्श्ववर्ती है द्य नागर जी ने व्यक्ति और समाज , मानव –मन के सम्बन्धों की भूमिका पर खडे होकर कर्म और आनन्द ज्ञान और चेतना धर्म और नैतिकता , भारतीय संस्कृति आदि अनेक समस्याओं को गहराई से देखा समझा और प्रस्तुत किया है द्य हम कह सकते है कि नागर जी का साहित्य व्यक्ति और सामाज के चित्रण के प्रति अनेक मानस की साफ सुथरी अनुभूतियों का निर्मल जल है |

'बूंद और संमुद्र ' की भूमिका सामाजिक और वैयक्तिक जीवन के अन्दर बाहर के परिवेश को उजागर करती है सामाजिक सन्दर्भों के बिना व्यक्ति का व्यक्तित्व अधूरा रह जाता है और सामाजिक सम्बन्धों को स्वस्थता और अनिवार्यता व्यक्ति द्वारा ही प्राप्त होती है | इसी सार्थकता को नागर जी ने 'बूंद और संमुंद्र' में सिद्वकिया है |

नागर जी का मानना है "व्यक्ति और समाज" 'बूंद और संमुंद्र' की तरह है द्य दोनों की स्थिति सुरक्षित रखने के लिए मै सही संतुलन चाहता हूं और अपनी चाहना से अटूट रूप से बंधा हंआ हूं |"[1]

अमृतलालनागर सामाजिक जीवन के रचनाकार थे , अतः उनके 'बूंद और समुंद्र' में समाज का उपयोगी रूप उभरकर सामने आया है| 'बूंद और समुंद्र' में उनकी सम्पूर्ण समाज दृष्टि उभरकर आई है |

"मनुष्य का आत्मविश्वास जागना चाहिये , उसकी जीवन में आस्था जागनी चाहिये | मनुष्य को दूसरे का सुख दुख मानना चाहिये | विचारों में भेद हो सकता है , विचारों के भेद से द्वन्द होता है और उससे उतरोतर उसका समन्वायात्मक विकास भी , पर शर्त यह हैकि सुख दुःख में व्यक्ति का व्यक्ति से अटूट सम्बन्ध बना रहे–जैसे बूंद से बूंद जुडी रहती है – लहरों से लहरें द्य लहरों से समुंद्र बनता है – इस तरंह बूंद में समुंद्र समाया है द्य....[2] यही नही 'बूंद और समुंद्र' में जो समाज ,वर्ग,वर्ण और अन्य सांस्कृतिक परम्पराओं के जीवन्त वर्णन और विभाजन मिलते हैं, वे उन्हे समाजशास्त्राी घोषित करते हैं |

समाज व्यक्तिओं से मिलकर बनता हैं अतः समाज के सापेक्ष व्यक्ति की महत्ता को नकरा नही जा सकता द्य बूंद बूंद के उपयोग के माध्यम को नागर जी महत्वपूर्ण बताते हैं |

"हर बूंद का महत्व हैं क्यों कि वही तो अनन्त सागर है एक बूंद व्यर्थ क्यो जाए | उसका सदुपयोग करो |" 3३ व्यक्ति का उपयोग परस्पर व्यक्ति के अटूट संबंध से हो सकता है | नारी पुरूष के सम्बन्ध में भी नागर जी ने इसी एकाकार अस्तित्व का प्रतिपादन किया है

नारी रूप बूंद को पुरूष रूपी समुद्र में मिलाकर अपने को एक समुद्र अनुभव करना चाहिये न कि रेत में पडी पडी सूख जाऐं |

"चारों ओर सीमा बांधकर लहराने वाले समुंद्र से छिटकी हुई एक बूंद बालू में जज्ब होने से पहले सागर में मिल जाने के लिए छटपटा रही थी द्य वह सागर सज्जन था – उसका अपना जीवन था–सारा जीवन था | "[4३]

व्यक्ति के अस्तित्व को महत्व देते हुए डॉ. त्रिभुवन सिंह कहते हैं, "रूढिगत समाज की दुर्बलताऐं, उसकी अव्यवस्थित मान्यताऐं, उसके बहुमुंखी परम्परा पालित विकार एवं दुर्व्यवस्थ ही वह अथाह समुद्र है जिसमें लघु बूंद की भांति प्रच्छन्न मानव विशाल लहरों की विभीषिका में अपना निजी अस्तित्व रखते हुए भी उससे पृथक रहने को विवश है " लेकिन बूंद का अपना अस्तित्व है , यह स्वयं की ईकाई में पूर्ण है| "[5]

'बूंद और समुंद' उपन्यास में व्यक्ति की यथार्थ जीवन की चेतना के सत् असत पक्ष एवं सामान्य भारतीय मध्यमवर्गीय पारिवारिक जीवन का सजीव चित्र अंकित किया है –

"यंहा समाज का हर वर्ग जीवनेच्छा के सहज क्रम में अपना अस्तित्व सिद्वकरने की कोशिश में लगा है – एक सामान्य मध्यमवर्गीय जीवन के नेता ,तुलाकार अभिजात वर्ग सरकारी नौकर , समाज सेवी , दूकानदार आदि विभिन्न जीवन स्तर को जी रहे हैं | यहां आर्थिक वैशम्य रूढिगत संस्कार उनका पोषण साथ ही उनसे मुक्त होने की छटपटाहट भी है |"

अतः इस पर नागर जी ने कहा कि 'बूंद और समुंद' उपन्यास में मैने अपना और आपका देश के मध्यमवर्गीय पारिवारिक समाज का

गुणदोष भरा चित्र ज्यो का त्यो अंकित करने का भरपुर प्रयत्न किया है |" [6]

नागर जी पारिवारिक कर्तव्यों को सर्वोपरि मानते हैं | "कुटुम्ब व्यक्तिगत प्रेम से बडी वस्तु ह| वैवाहिक कुटुम्ब समाज को सुसंस्कृत बनाऐं रखने के लिए एक शक्तिशाली परम्परा है, व्यक्तिगत प्रेम से समाज के बन्धन ढीले पड जाऐंगें | कुटुम्ब की भावना नष्ट हो जायेगी | " [7]

कन्या के चिन्तन के द्वारा नागर जी एक आदर्श परिवार की परिभाषा देते हैं – "कन्या अपने बहलावे को एक एसें परिवार की कल्पना करने लगी जंहा उसे पिता के रूप में आदर्श गुरू, सातविक स्नेहमयाी मां, हंसी खुशी से भरा पूरा परिवार मिलता है | सज्जन उस घर में दामाद होकर आया है , वह एक सुखद गृहणी है उसने अपने जीवन साथी के साथ परोपकार और समाज सेवा का व्रत लिया है " | [8]

'बूंद और समुंद्र ' नागर जी का मध्यवर्ग के समाज की समस्याओं को प्रस्तुत करने वाला सबसे सशक्त उपन्यास है | 'बूंद और समुंद्र' की भूमिका में लेखक ने अपना दृष्टिकोण सपष्ट करते हुए कहा है –"इस उपन्यास में मैने अपना और आपका – अपने देश के मध्यमवर्गीय नागरिक समाज का गुण दोष भरा चित्र ज्यो का त्यों आंकने का यथामति यथासाध्य प्रयत्न किया है और अपने और आपके चरित्रों से ही इन पात्रों को गढा है | "[9]

बूंद और समुंद्र के पात्र केवज मध्यवर्ग मात्र के ही नही है ,वरन समाज के अन्य सभी वर्गों की समस्याओं का प्रतिनिधित्व भी करते हैं |

बूंद और समुंद में जंहां एक और परम्परागत जीवन पद्वति, रीति–रिवाज,आचार व्यवहार, विचार विवेक, पुरानी चाल के लोगों और उनकी जीवन दृष्टियों का सटीक चित्रण है | वंही दूसरी ओर आधुनिक सामाजिक , आर्थिक, राजनीतिक शक्तियों , विचारधाराओं और परिस्थितियों के फलस्वरूप उत्पन्न होने वाली जीवन– दृष्टियां, व्यक्ति और उनकी समस्याऐ , रहन सहन, उलझनें आदि भी अधिक से अधिक व्यापकता मे मौजूद है | एक ओर ताई , नन्दों, बडी कल्याणी, राजाबहादुर, द्वारकादास, लाले दलाल, मनिया जैसे लोग है तो दूसरी ओर वनकन्या, चित्रा, शीला, स्विग, सज्जन महीपाल जैसे लोग भी हैं |

जंहा एक ओर आटे के पुतले बनाकर मारण मंत्र के उपयोग से पक्का विश्वास करने वाले , एक स्तर पर अत्यन्त सहज सरल किन्तु दूसरे स्तर पर अत्यन्त उलझाव भरे प्रणियों की दूनिया है वही हवाई जहाज से पर्चे गिराकर चुनाव के आन्दोलन की सरगर्मियां भी है और साथ ही इन एक दूसरे से सर्वथा भिन्न दुनिया को जोडने वाली कडिया भी कम नही है | कर्नल , रामजी, मि. वर्मा,तारा ऐसी ही कडिया हैं जो इन दोनों दुनियाओं के बीच आर पार गुंथी हुई है |

इस प्रकार से 'बूंद और समुंद्र' में इन दो भिन्न जीवन पद्वतियों और जीवन दृष्टियों का इतना विस्तृत और व्यापक किन्तु एक हद तक एक दूसरे से असम्बन्ध चित्रण ही उपन्यास की महत्वपूर्ण विशेषता है और उसकी दुर्बलता भी |

निःसंदेह लेखक ने ऐसे कई सूक्ष्म और सुसपष्ट दोनो प्रकार के सूत्रों को उपस्थित करने का प्रयत्न किया है , जिनसे ये दोनों जगत एक दूसरे से सम्बद्व और प्रभावित होते हैं , एक दूसरे की समस्याओं को जन्म देते और सुलझाते हैं , एक दूसरे का संस्कार करते हैं |

इस प्रकार जंहा हमारे आज के आधुनिक जीवन और उसकी समस्याओं की जडें विशेषकर इन समस्याओं के साथ उलझने वाले व्यक्तियों के संस्कारों के मूल रूप किन्ही परिचित अपरिचित पुरानी मान्यताओं, धारणाओं और आचार व्यवहार में छिपे हुऐं हैं और अपना वर्तमान रूप उन्ही संस्कारों द्वारा प्राप्त करते हैं | वही दूसरी ओर उन आधुनिक प्रवृतियों और विचारों से संघात से जीवन की पुरानी मान्यताऐं धीरे धीरे विघटित हो रही है, विश्रंखल हो रही है , और नये तत्व उन्हे एक नया ही रूप प्रदान कर रहें हैं – यह रूप न तो पुराना और न नया ही , इसीलिए चरित्रहीन है किसी हद तक पापहीन, जर्जर और आधारहीन है |

सामाजिक जीवन की इस सक्रान्ति का अध्ययन आज के महाकाव्य का विषय है और इसमें कोई शक नही है कि अमृतालालनागर ने अपने इस उपन्यास को महाकाव्य का फलक ही प्रदान किया हे और उसे उतने ही गरिमा तक उठाने और स्थिर रखने का प्रयत्न भी किया है |

बूंद ओर समुंद' में लखनउ के जिस चौक का चित्र नागर जी ने उपस्थित किया है उसमें एक जीवन व्यवस्था टूटती और एक नई जीवन व्यवस्था जन्म लेती दिखती है | इसीलिए उपन्यास में एक ओर प्राचीन शिखरों के ढहने की करूणा हैं तो दूसरी ओर नई आलोक किरण की प्रथम रोमांचकारी सिहरन भी |

मूलतः

बूंद ओर समुंदश्र में श्बूंद ओर समुंद' के व्यक्ति और समूह के स्वरूप परस्पर सम्बन्ध – सहयोग और संघर्ष को खोजने और समझने का प्रयास है | सत्य बुनियादी तौर पर द्वन्द्वात्मक है, जीवन को उसकी द्वन्दात्मकता पहचाने बिना ही नही समझा जा सकता यह द्वन्द जिस प्रकार व्यक्ति और समूह के बीच है उसी प्रकार स्वयं व्यक्ति के भीतर भी है और साथ ही ये द्वन्द ग्रस्त व्यक्ति और समूह स्थिर नही है , निरन्तर गतिमान है, परिवर्तनशील है | इस प्रकार स्थिरता और गतिमान के बीच भी एक अलग द्वन्द मौजूद है |

यह काल उल्लेखनीय और महत्वपूर्ण है कि सत्य ही द्वन्दात्मकता के इन विभिन्न रूपों और स्तरों को उनके पारस्परिक प्रभावों और सम्बन्धों को , एक साथ ही नागर जी अपने इस उपन्यास में खोजने का प्रयत्न करते थे |

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

आधार ग्रन्थ	*लेखन वर्ष*	*प्राकशन एवं संस्करण*
1 बूंद और समुंद्र	1956	किताब महल इलाहाबाद पांचवा संस्करण 1978
1 आजकल पत्रिका	अक्टूबर 1974	पृष्ठ न. 6
2 बूंद और समुंद्र	पृष्ठ न. 429 (अमृतलालनागर)	
3 अमृतलालनागर	बूंद और समुंद	पृष्ठ न. 272
4 अमृतलालनागर	बूंद और समुंद	पृष्ठ न. 273
5 डॉ. त्रिभुवन सिंह	हिन्दी उपन्यास और यथार्थ	पृष्ठ 524
6 अमृतलालनागर	भूमिका– बूंद और समुंद	पृष्ठ न0 5
7 अमृतलालनागर	बूंद और समुंद	पृष्ठ न. 366
8 अमृतलालनागर	बूंद और समुंद	पृष्ठ न. 273
9 अमृतलालनागर	बूंद और समुंद	पृष्ठ न. 5

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished research paper.Summary of Research Project,Theses,Books and Books Review of publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- International Scientific Journal Consortium Scientific
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- Google Scholar
- EBSCO
- DOAJ
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database

Indian Streams Research Journal
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.isrj.net